Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

कृष्णा सोबती का कथा–संसारः नारी चेतना और सामाजिक यथार्थ

[1]संगीता सिंह, [2]डॉ. संतोष कुमार सिंह

[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक

[1–2]विभागः हिन्दी, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, (सारण), बिहार

सार

कृष्णा सोबती का कथा–संसार नारी चेतना, सामाजिक यथार्थ और स्त्री अस्मिता के जटिल प्रश्नों को उद्घाटित करता है। उनके कथा–साहित्य में स्त्री पात्रों की आत्मनिर्भरता, जुझारूपन और सामाजिक संघर्षों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। नई कहानी आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली सोबती जी ने अपने सीमित लेकिन सशक्त लेखन के माध्यम से नारी की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति को अभिव्यक्त किया है। उनके कहानी संग्रह बादलों के घेरे तथा अन्य कहानियाँ विभाजन की पीड़ा, स्त्री–पुरुष संबंधों, परिवारिक विघटन, सामाजिक असमानता और स्त्री की स्वतंत्र पहचान के मुद्दों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ जैसे बादलों के घेरे, दादी अम्मा, भोले बादशाह, बहनें, बदली बरस गई, आदि, स्त्री की मानसिकता, भावनात्मक संघर्ष और सामाजिक बेड़ियों को तोड़ने की उनकी इच्छाशक्ति को सामने लाती हैं। सोबती की लेखनी स्त्री के आत्मसम्मान और अस्मिता की खोज पर केंद्रित रही है, जहाँ स्त्री सिर्फ एक सहनशील प्राणी न होकर स्वयं के अस्तित्व को स्थापित करने के लिए संघर्षरत दिखाई देती है।

मुख्य शब्दः

कृष्णा सोबती, नई कहानी आंदोलन, स्त्री चेतना, सामाजिक यथार्थ, नारी अस्मिता, विभाजन की पीड़ा, स्त्री–पुरुष संबंध, आत्मनिर्भरता, पारिवारिक विघटन, सामाजिक संरचना, स्त्री विमर्श।

भूमिका

मैथ्यु अर्नोल्ड का प्रस्तुत कथन साहित्य एवं जीवन की सही परिभाषा दे जाता है । जीवन को अभिव्यंजित करने में उपन्यास, नाटक, निबंध इत्यादि जैसी गद्य विधाओं के साथ–साथ कहानी का भी मूल्यवान योगदान रहा हैं । कहने में कोई दो राय न होगी कि जीवन को परिभाषित करने में कहानी भी सफल विधा रही है । भारतेन्दुयुग पूर्व से पल्लवित होनेवाली कहानी भारतेन्दु, द्विवेदी, प्रेमचंद, स्वातंत्र्योत्तर आदि पड़ावों को पार करके चरमोत्कर्ष की स्थिति प्राप्त कर सकी है । स्वातंत्र्योत्तर युग में सचेतन कहानी, समकालीन कहानी, अचेतन कहानी, आँचलिक कहानी, नयी कहानी इत्यादि जैसे पहनावे लेकर कहानी ने अपनी लोकप्रियता को कायम रखा है ।

नई कहानी आंदोलन में कृष्णा सोबतीजी अकेली कहानीकार हैं जिन्होंने संख्या की दृष्टि से कम कहानियाँ लिखी हैं । यह कम लिखना ही एक तरह से उनकी अपनी पहचान बना गई हैं। आंदोलन के दौर में जब उनके अनेक समकालीन लेखक बहुत सक्रिय थे, उनका कोई प्रतिनिधि संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ । उनकी प्रतिनिधि कहानियों का एकमात्र संग्रह सन् 1980 में आया । इसके पूर्व लेकिन नई कहानी आंदोलन के लगभग थिरा जाने के बाद, उनकी लंबी कहानी 'यारों के यार' तिन पहाड़ नाम से प्रकाशित हुआ। इसके बाद उनकी सिर्फ एक लंबी कहानी आयी 'ऐ लड़की'। स्पष्ट है कि इतनी कम कहानियाँ लिखकर नई कहानी आंदोलन में अपने को स्थापित करके अपनी एक

विशेष पहचान की दृष्टि से कृष्णा सोबतीजी एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कहानीकार थी।

कृष्णा सोबतीजी के सृजन कार्य के संदर्भ में यह बात बार–बार दुहराई जाती रही है कि उनका कम लिखना दरअसल विशिष्ट लिखना है । यही बात उनके कहानी साहित्य पर बखूबी लागू होती है । अपने कम लिखने को सोबतीजी यूं स्पष्ट करती हैं, ''मुझमें एक गहरा ठंडापन हैं । कभी–कभार लिखने बैठ जाती हूँ तो वह मेरे निकट समूची प्रक्रिया का एक अंग बन जाता है। कुछ लिखना मेरे निकट एक गंभीर और जोखिम भरी स्थिति बन जाती हैं। इसीलिए मैं अपने लेखक को कभी पटाती नहीं। दांव पर नहीं लगाती। अपने से अलग हटकर मैं उसे दूसरा व्यक्ति समझती हूँ और उसकी इज्जत करती हूँ ।''[30]

कृष्णा सोबतीजी ने नारी पक्ष धरता की बात सशक्त ढंग से सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, स्तर पर की है । उनके स्त्री पात्र परिस्थितियों के मध्य से विकसित हुए हैं । कटू से कटू और जटिल से जटिल परिस्थितियों से नारी गुजरती हैं। लेकिन लेखिका ने उन नारियों को हीन ग्रंथियों का शिकार होते हुए न दिखाकर उन्हें जूझारू, आत्मसम्मानी बताया हैं । पात्र परिस्थितियों से जुझते है, सहज रूप से आगे बढ़ते हैं।

स्त्री की अस्मिता और मुक्ति का सवाल शुरू से ही कृष्णा सोबतीजी की मुख्य चिंता रही हैं। प्रेमावेग की दुर्दमता को वे गहरी आसक्ति के साथ अंकित करती हैं। सारे सामाजिक विधि–निषेधों के कुल किनारों को ढहाता बहाता वह थोड़ी देर को बुरे भले ही पहचान नष्ट करता हुआ बढ़ता हैं । 'घर' और 'निघर' का द्वन्द्व गहरे तनाव के साथ वहाँ उपस्थिति है सारे संभवित परिणामों को अनदेखा करता हुआ । इसीलिए स्त्री की

[30] कृष्णा सोबती एक मूल्यांकन, छबिल कुमार मेहेर, पृ. 10

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

अस्मिता और स्वत्व की लड़ाई को वे अपेक्षाकृत अधिक गंभीर स्तर पर लड़ती दिखाई देती हैं।

कृष्णा सोबतीजी की कहानियाँ कुल तीन हैं जिनमें से एक उनका कहानी संग्रह है जिसमें उनकी प्रथम एवं सबसे पुरानी कहानियाँ संग्रहित हैं । वह है 'बादलों के घेरे' (1980), 'यारों के यार– तिन पहाड़' (1968), 'ऐ लड़की' (1991)।

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में समाविष्ट कहानियाँ कृष्णाजी ने समय–समय पर अलग–अलग पत्रिकाओं में प्रकाशित की हैं, और बाकी बची कुछ कहानियाँ मिलाकर 'बादलों के घेरे' नाम से सन् 1980 में प्रकाशित किया हैं । 'बादलों के घेरे' कृष्णा सोबतीजी की प्रथम रचना है। सन् 1980 में पूरा कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ हैं। कृष्णा सोबतीजी की अपने भीतर के रचनाकार से साक्षात्कार कर पाने की तड़प भरी बेचैन कोशिश 1944 से 1959 तक की पन्द्रह वर्षो की कालावधि में फैली चौबीस कहानियाँ जिनमें से अधिकतर 1952 से 1955 के बीच लिखी गई हैं। इन कहानियों में विभाजन की पीड़ा, असफल प्रेम की टीस है, मौत की छाया तले सहमी, सिकुड़ी जिंदगी है, अपनी धुरी से भटक गए युग की नवयौवना है, भटकती राहों में सिर धुनती निबुद्धि है, पश्चाताप के आँसुओं में उजली– निथरी, राह अवलोकती सदबुद्धि है, आँसू हैं, दर्द है, पीड़ा के अक्षम कोश हैं, हाथ से छूट–छूट जाते जीवन को मुट्ठी में कसकस बंधने की ललक है, पराजय है, अवासद हैं। नहीं हैं उल्लास, आशा, मंगल, उत्साह, भविष्य की भटती पौ, उजाले की किरण, जीवन का संगीत घर संबंधों की पुख्ता हदबंदी।

मौत के थराते सन्नाटे में 'बादलों के घेरे' की लगभग सभी काहनियाँ गुंथी हुई हैं। यहाँ जीवन निर्झर सा बहता नहीं मौत के कुओं में बंधे तालसी उसी दायरे में लौटता, सिर

धुनता झड़ने को अभिशप्त हैं। ऐसा नहीं की इन कहानियों के पात्रों में जीने की लालसा चूक गई हैं। वे जीना चाहते है, तमाम सुख आनंद और रस के साथ।

सोबती की कहानियों का कथ्य :

बादलों के घेरे :

'बादलों के घेरे' संग्रह की पहली और महत्वपूर्ण कहानी बादलों के घेरे जनवरी, 1955 में अर्थात् 'नयी कहानी आंदोलन' के शुरूआती दौर में लिखी गई थी। कहानी के प्रारंभिक बिन्दु से हम यह देखते हैं कि टी.बी. से पीड़ित मन्नो के मन में न तो कोई चाहत रह गई थी और न ही जीने की ललक। वह बखूबी जानती थी कि रवि उसे दिलो–जान से चाह रहा है परंतु इससे उसके भाग्य की लकीरें तो नहीं बदल सकती । यही कारण है कि वह अपनी भावनाओं के ज्वार को कभी बाहर नहीं निकलने देती, इसके विपरीत उसी में घुटती, उसी में जीती और मरती रहती है परंतु रवि, मन्नो की जरूर को खूब समझता है।

वह सबकुछ भूलकर (बुआ की चेतावनी के बावजूद) मन्नो को पाना चाहता है, उसे छूना चाहता है, उसे करीब से महसूस करना चाहता है परंतु मन्नो का दो टूक जवाब, 'रवि जिसे तुम झेल नहीं सकते, उसे पाने के लिए हाथ मत बढ़ाओ'– उसे सशरीर जरूर दूर ले जाकर खड़ा कर देता है मगर उसका दिल सदा के लिए मन्नो के पास ठहर जाता है।

इस बीच रवि की शादी एक सुंदर लड़की 'मीरा' से हो जाती है और उनके दो प्यारे बच्चे भी होते हैं किन्तु समय का खेल देखिए। आज रवि टी.बी. से पीड़ित हैं उसको उसे सेनेटोरियम में पड़े–पड़े अपने अंतिम दिन गिनने पड़ रहे हैं, जहाँ कभी मन्नो के अकेले

गुजरना पड़ा था । जिस डर से वह मन्नो को छू नहीं पाया था, उसे करीब से महसूस नहीं कर पाया था, वही डर आज उसकी पत्नी, उसके बच्चे को उससे दूर ले गया है। कॉटेज में पड़े–पड़े रवि का मन आज मीरा को नहीं, मन्नो को ढूंढ रहा है। मीरा को सशरीर पाकर भी वह मीरा से कितनी दूर है और मन्नो को न छूकर भी वह उसकी छुअन बराबर महसूस कर रहा हैं। टी.बी. के दंश से उपजे मारक अकेलेपन को झेलती ही मन्नो मृत्यु का साक्षात्कार करती है और अंततः भुवाली के इन्हीं बादलों के घेरे में वह समा जाती है, यही त्रासद गाथा रवि के साथ भी दुहराई जाती है। निश्चय ही यह सोबती जी की सर्वोत्तम कथा–सृष्टि है और 'बादलों के घेरे' संग्रह की उपलब्धि भी ।

दादी अम्मा :

यह कहानी 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में इस 1980 में प्रकाशित हुई हैं। दादी–अम्मा जो अपना पूर्व का अधिकार छिन जाने के बाद मात्र 'दादी' और 'अजिया सास' बनकर रह जाती हैं । दादी अम्मा कहानी है 'मेहरा' की, मेहरा के भरे–पूरे परिवार की जिसमें उसके तीन बेटे, तीन बहुए, तीन बेटिया, पति और सास ससूर है । इस काहनी में संयुक्त परिवार वाली थीम नजर आती हैं जिसमें आज जो सास बन बैठी है कल वह दादी, आज जो बहू है वह कल सास और आने वाली बहू यह चक्र लगातार चलने वाला हैं । सास बहू में बहू बनकर जीवित रहती है । क्योंकि सास भी कभी बहू थी । इस कहानी के नारी पात्र मेहरा की सास है ।

भोले बादशाह

कृष्णा सोबती की यह कहानी 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में सन् 1980 को प्रकाशित हुई हैं। माँ इस कहानी का प्रमुख नारी पात्र हैं । यह माँ अपने मतिमंद बेटे को लेकर समस्या ग्रस्त हैं । बेटे की मालिश करते समय उसकी माँस पेशियों का सख्तपन छुकर

उसे लगता हैं कि कितना जवान बेटा है मेरा कोई भला इसको देखकर यह लगेगा की यह पगलाया है। साथ में भोले की माँ को इस बात का भी दुःख हैं भरी जवानी में उसके बेटे के होश हवाश गुम हो गये है, उसकी हरकत मासूम बच्चों की जैसी है और बातें तो पूछो ही मत कभी भाभी को कभी पड़ोसियों को मारने की धमकियाँ देता फिरता हैं । कभी अपने बड़े भईया की हडडीयों को चूरा बना देने की बात करता हैं । और आज तो नजाने कहा से सुनकर आया है भोले बड़बड़ा जा रहा हैं मेरा ब्याह होगा, मेरी भी दुल्हन आएगी वह भी बेटा उजेगी ।

'भोले बादशाह' एक मानसिक स्तर पर कमजोर पगलाया और मनोरूग्ण लड़का है। जो अपनी मतीमंदता के कारण अपनी माँ, अपनी भाभी, भईया और पड़ोसियों के लिए समस्या उत्पन्न करता रहता है, और अंत में स्वयं की ही हरकतों की वजह से काल में विलिन हो जाता हैं ।

बहनें :

बहनें कहानी कृष्णाजी के बादलों के घेरे 1980 कहानी संग्रह में प्रकाशित की गई हैं। इस कहानी में तीन बहनों की कहानी हैं यह तीनों बहनें बहुत समय बाद अपनी बड़ी बहन के यहाँ उसके बेटे के विवाह के अवसर पर मिल रही है । कृष्णाजी ने बड़े ही रोमांचकारी ढंग से इन तीनों बहनों के सुख–दुख का वर्णन किया है जो उन्हें उनके ससुराल में मिलने आए हैं ।

मंझली की गोद सुनी थी अर्थात् उनके यहाँ कोई बच्चा नहीं था । प्रस्तुत कहानी में मंझली बहन के यहाँ बच्चा न होने की गहरी मनोव्यथा का चित्रण भी लेखिका ने किया हैं। मंझली तथा छोटी नाशता कर रही थी, तभी वहाँ धर्म आता है, और अपनी मौसियों को पाँव छूता हैं। दोनों मौसियाँ उसका स्नेह से माथा चूमती हैं और अपना दुःख

बदलकर अपनी ममता प्रगट करती हैं । रात की रोशनी की जगमगाहट में बड़ी धूमधाम से घुड़पढ़ी होती हैं। सभी आपस में हँसी मजाक कर रहे थे। खुशी के इस अवसर पर मँझली को कहीं चैन नहीं था । ऐसे में बड़ी बहन की सास मंझली के हृदय में जलती मनोव्यथा को बार बार जलाती रहती हैं ।

दूल्हन ससुराल आने पर बहिनों को उपहार और बहू को गहने–कपड़े भेंट किए जाते हैं। रात के समय तीनों बहनें साथ बैठती हैं, तब तीनों की आंखों में से आँसू आ जाते हैं। सुबह जब बड़ी दोनों बहनों को विदा करती हैं। तीनों बहनें आपस में बिछुड़ने के गम से रो पड़ती हैं। 'बहनें' कहानी में सोबतीजी ने तीनों बहनों की गहरी व्यथा–कथा एवं मंझली के निःसंतान होने की मार्मिक मनः स्थिति का चित्रण किया हैं ।

बदली बरस गई :

'बदली बरस गई' सोबतीजी की उच्चकोटी की कहानी हैं । कहानी में कल्याणी का चरित्र मुख्य हैं। उनके अलावा उसकी माँ का चित्रण है, जो आश्रम में रहती है । आश्रम की व्यवस्था और साधना से जुड़ी हुई कल्याणी की माँ का जीवन निरस हो चुका हैं। कल्याणी अपनी माँ के साथ आश्रम में रहती है । आश्रम में पूजा–पाठ आरती–ध्यान होता है। समय के बढ़ते प्रवाह के साथ कल्याणी अब जवान हो जाती है । उसमें स्वयं विचार करने की, सोचने की, समझने की शक्ति आ चुकी हैं।

जैसे ही कल्याणी बड़ी होती जाती है वैसे वैसे इस आश्रम की सृष्टि और जिंदगी से विरक्ति जागती है। उसे अपना बचपन, अपने पिता का धर याद आ जाता है । से इन भगवे वस्त्रों मोटे वस्त्रों के बदले रंग–बिरंगी कोमल वस्त्र पहनने की इच्छा होती है। अब कल्याणी आश्रम की व्यवस्था से उब जाती है । उसकी माँ उसे गुरू की सेवा का कार्य सौंपती है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

वह इस आश्रम की जिंदगी से बाहर निकलकर खुली हवा में सांस लेना चाहती है । अतः गुरू महाराज को प्रणाम करते हुए, वह उनसे निवेदन करती है कि अपनी साध्वी माँ की उपस्थिति में वह कुछ कहना चाहती है । साध्वी माँ को वहाँ बुलाया जाता है और उसके सामने कल्याणी महाराज से कहती है कि अब वह इस आश्रम में नहीं रहेगी। कल्याणी की यह बात सुनकर साध्वी माँ को ठेस पहुँचती है। महाराज कल्याणी से कारण जानना चाहते है, तब वह बताती है कि आश्रम और उसकी व्यवस्था में कोई आस्था नहीं हैं। इसलिए वह इस आश्रम को छोड़कर अपना घर बनाकर जिंदगी बिताना चाहती हैं।

महाराज कल्याणी को घर जाने की संमति देते हैं । जाने से पहले कल्याणी गुरू महाराज और अपनी साध्वी माँ को प्रणाम करते हुए कहती हैं कि अब आश्रम की कोठरी में मेरा दम नहीं घूटेगा । अब मेरा अपना घर और परिवार होगा । साध्वी माँ स्तब्ध–सी रह जाती है और देखती रहती है । गुरू महाराज भी कल्याणी से कुछ नहीं कहते, लेकिन कल्याणी के वहाँ से जाने के बाद गौरी माँ से कहती हैं कि ‘‘इस बात का शौक ना कर, यह भरी बदली थी, जो अब बरस गई।’’

इस कहानी में कल्याणी नामक युवती की मनःस्थिति को चित्रित किया हैं ।

गुलाबजल गँडेरियाँ :

कहानी की नायिका धन्नो, जो कलकत्ता जैसे महानगर के एक मकान में रहती है । अपनी कोठरी के गंदे वातावरण में जीवन बितानेवाली धन्नो एक अकेली, असहाय विवश एवं अभावग्रस्त जिंदगी बिता रही है। धन्नो के पति की मृत्यु हो चुकी है और आर्थिक अभाव के कारण एक समय उसे अनाचार एवं अनैतिक मार्ग अपनाने के लिए मजबूर बनना पड़ा था। आज धन्नो अपने अकेले घर में अकेली, अभावग्रस्त जीवन बिता रही हैं।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

आज धन्नो के पास न तो यौवन है, नहीं धन, जिसके सहारे वह अपना जीवन निर्वाह कर सके ।धन्नो अपनी कोठरी में पड़ी पड़ी अपने भूत– वर्तमान को महसूस करती हैं । अपने कमरे में अकेली कृश शरीरवाली बीमार–सी धन्नो का गला प्यास से सुखता जला जा रहा है। पानी के बिना उसका शरीर तपता चला जा रहा हैं ।

एक समय था जब वह नन्हें–नन्हें अपने बच्चों को देखकर ममता से प्रसन्न होती थी। लेकिन आज बच्चों को उनसे स्नेह नहीं है ।आज उसे लगता है कि नये साल का नया दिन उसके जीवन में अकेलेपन, उदासीनता और उलझने लेकर आया हैं ।

सकुन्ती उन दिनों को याद करती है, जब उसके पति की मृत्यु हो गई थी। वह रात उसे काली अमावस की रात–सी प्रतीत होती है । घर के रक्षक की उपस्थिति के बिना उसकी सत्ता मानो समाप्त हो गई हो ऐसा लगता है। सकुन्ती अपने अतीत में खो जाती है । उसे अपने शादी के दिन याद आते है । लेकिन आज नये वर्ष उसके जीवन न हर्ष, न आनंद, ना ही उल्लास हैं । सकुन्ती को लगता है कि यह नये वर्ष की अंतिम वर्ष की बिदाई थी। उसका बेटा उसे नये साल प्रणाम करता है । तब बचपन की तस्वीरें उसके सामने घूमने लगी हैं। आज उसकी आंखों के आँसुओं को पोछनेवाला कोई नहीं था। इस कहानी में एक वृद्ध नारी की मनोदशा का बेबाक चित्रण सोबतीजी ने किया हैं ।

दोहरी साँझ :

'दोहरी साँझ' कहानी की नायिका जया है । दोहरी साँझ कहानी है जया की जो अब वृद्ध हो गई है, वह अब अपने पुत्र अविनाश के साथ रहती हैं। चलो माँ ! कहते हुए अविनाश बाँह बढ़ा माँ को सहेजता हैं । वजरी की सड़क पर जया के पाँव की आहट अविनाश को आहट नहीं, रगड़–सी लगती है । आज ऐसी उदास शाम में माँ के साथ इन रूखे खण्डहरों में यहाँ आने का प्रयोजन ही कहाँ था । तैयार होकर अविनाश जब

Global Insights, Multidisciplinary Excellence

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

कमरे से निकला तो घर के पिछवाड़े लॉन में माँ को चुपचाप मौन बैठे देख पिता की याद हो आयी । पास जाकर बोला, माँ चलो । आज कहीं घूमने चलें ।

माँ ने हाँ–ना कुछ नहीं की, देखती–भर रही। अविनाश ने आदर से हाथ पकड़कर उठाया तो चल पड़ी। माँ–बेटे एक–दूसरे को समझते–समझते फिर दूर जा पड़े। बेटे के मन में कटुता नहीं जाती । छाया के लिए उसने माँ को कितना कहा, कितना समझाया, पर वह जमी रही । क्या है जो छाया में नहीं हैं, पर माँ कुलीनता को सबसे आगे रखती है । और कुलीनता में रखती हैं भरे–पूरे धनी परिवार को । कहाँ से लायेगी छाया ऐसा परिवार। एक बेचनेवाले की आवाज सुनाई देती हैं गुलाबजल गँडेरियाँ । लेकिन गुलाबजल तो धन्नो के लिए संभव नहीं था। ऐसे में उसे पुराने दिन याद आ जाते हैं। वह मलाइ की कुल्फी, जामून के मीठे मेवे को याद करती हैं । मन में अपने जीवन के इन अभावों तथा अतृप्त इच्छाओं को पूरा करने की बेहद इच्छा हो रही है । लेकिन आज उसके पास कुछ नहीं है । आज बीमार धन्नो के हाथ–पाँव सुख गये हैं ।

धन्नो कल्पना में देखती है कि चार आदमियों के कंधों पर जुलती हुई वह घाट की ओर जा रही है । अपनी जिंदगी में वह अकेली है और उसे आश्वासन देनेवाला, मृत्यु के निकट आने पर उसके मुँह में गंगाजल पिलानेवाला कोई नहीं हैं । धन्नो की सांसे रुक जाती है। अचानक बारिश होने लगती है । लेकिन धन्नो के प्यासे गले तक पानी की एक बूंद तक नहीं पहुँच पाती । धन्नो ईश्वर को प्यारी हो जाती है। इस प्रकार कहानी में सोबतीजी ने एक स्त्री की विवशता, अकेलापन एवं उसकी मनोदशा को चित्रित किया हैं ।

कुछ नहीं – कोई नहीं :

यह कहानी 'बादलों के घेरे' 1980 में प्रकाशित हुई हैं । 'कुछ नहीं– कोई नहीं' कहानी में प्रेम के लिए दो गृहस्थियों में बटी और अंततः दोनों ओर से बहिष्कृत 'शिवा' की कहानी हैं। 'शिवा' 'कुछ नहीं – कोई नहीं' कहानी की नायिका हैं । प्रेम के लिए वह दो गृहस्थी में बँट गई और अंत में उसे क्या मिला दोनों घरों से रूसवाई वह दोनों घरों से अंततः बहिष्कृत की गई इसलिए उसका आज कोई घर नहीं है और उसका कुछ नहीं कोई नहीं हैं ।

अभी उसी दिन ही तो :

'अभी उसी दिन ही तो' कहानी में सोबतीजी ने एक वृद्ध महिला की मनोदशा का चित्रण किया है । अपने पति की मृत्यु के बाद पत्नी की कैसी हालत एवं मनोदशा होती है, उस बात का सक्षम उदाहरण यह कहानी है । 'सकुन्ती' जो इस कहानी की नायिका हैं।

बात और कि उसके पिताजी उसके पिता नहीं चाचा है। ऐसे अभाव को वह माँ के लिए पूरा कर सकेगी। इस कहानी में नायिका जया महेन्द्र के बेटे की माँ है और संयोग वश इसी महेन्द्र की बेटी 'छाया' के लिए वह अपने बेटे अविनाश को विवाह की अनुमति देती हैं।

जिगरा की बात :

अमरो जिगरा की बात की नायिका हैं । अमरो एक वृद्ध महिला है, जो जिंदगी में अकेली हैं केवल अपने पुत्र के साथ रहती हैं । अमरो की जिंदगी रास नहीं आई, कच्ची उम्र में ही उसके पति का स्वर्गवास हो गया । अमरो का पति पीछे छोड़ गया पाँच लड़के और एक लड़की को अमरो की गोद में । बेचारी अमरो अपने इन्हीं बच्चों के संग पहाड़ सी

जिंदगी काट सकती थी किन्तु दुर्भाग्य की मार उसे फिर खानी पड़ी और प्रकृति ने उसके चार लड़के और एक बेटी को उठा लिया । अमरो पर एक और दुख का पहाड़ गिर पड़ा।

बेचारी अमरो क्या करती अपने बच गये एक लौते पुत्र 'सरदारे' को ही वह तल हाथ के छाले की तरह संभाल कर रखने लगी । उसे उसने अपना खुन देकर सीचा । आखिर वही तो है उसके जीने का सहारा । बिना पुत्र सरदारे के उसकी जिंदगी में बचा क्या। कौन है उसका इसी भय के कातर अमरो अपने लड़के सरदारे के हर लाड़ भी पुरा करती हैं । वह बार–बार शहर जाता है, गाँव वाले उसके विषय में अनाप शनाप बकते है ऐसा अमरो को लगता हैं । अमरो को अपने पुत्र पर गर्व है, उसे अपना पुत्र बड़ा गबरू जवान, मर्दाना लगता है । और उसे अपने आप पर भी गर्व होता है कि वह 'सरदारे' की माँ हैं ।

सोबतीजी ने बहुत ही सजिंदगी से एक माँ के हृदय के मातृत्व का वर्णन किया है, मानो हथकड़ीयों में सरदारे के हाथ नहीं अमरो की ममता कैद है जो अपने बेटे की गलती को जान बूझ कर अनदेखा कर रहा है। माँ की ममता कुछ ऐसी ही होती है। मुझे तो लगता है कि अमरो की मानसिकता ही कमुछ रोगी बन गई है, जिंदगी ने उसे बहुत छला और छिला है इस कारण से वह सिपाही से कठोर दिल से बात कर अपना पक्ष साफ कर रही हैं । उसे अपने पुत्र पर गर्व है जिसने ऐसा काम किया जिसने डाका डाला बेबस वृद्धा अमरो और कर भी क्या सकती है यही उसकी विवशता है।

निष्कर्ष

कृष्णा सोबती का कथा–साहित्य स्त्री जीवन के संघर्षों, सामाजिक असमानता और आत्मनिर्भरता की आकांक्षा को सशक्त रूप में प्रस्तुत करता है। उनकी कहानियाँ नारी की

अस्मिता, पारिवारिक और सामाजिक विडंबनाओं, तथा मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों का सजीव चित्रण करती हैं। सोबती की लेखनी स्त्री को एक कमजोर और पराश्रित प्राणी के रूप में न दिखाकर उसे एक आत्मनिर्भर, सशक्त और निर्णय लेने वाली व्यक्ति के रूप में स्थापित करती है। उनके साहित्य में प्रेम, स्वतंत्रता और सामाजिक बेड़ियों से मुक्ति की चाह स्पष्ट झलकती है। कृष्णा सोबती ने सीमित लेखन के बावजूद, स्त्री विमर्श और सामाजिक यथार्थ को जिस गहराई से प्रस्तुत किया है, वह हिंदी कथा साहित्य में उन्हें एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

संदर्भ

- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (2002) भारतीय महिलाएँः नयी दिशाएँ, नयी दिल्ली, भारत सरकार, प्रकाशन विभाग।
- जैन, प्रतिभा और शर्मा, संगीता (1998) भारतीय स्त्रीः सांस्कृतिक संदर्भ, जयपुर, रावत पब्लिकेशन।
- यादव, राजेन्द्र (1997) उपन्यास–स्वरूप और संरचना, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- अग्रवाल, साधना (1995) वर्तमान हिंदी महिला कथा–लेखन और दाम्पत्य जीवन, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- देसाई, मीरा (1982) भारतीय समाज में नारी, दिल्ली, मैकमिलन प्रकाशन।
- सिंह, डॉ. त्रिभुवन (1979) हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, वाराणसी, हिन्दी प्रचारक संस्थान।

- गुप्ता, उर्मिला (1978) स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ, नयी दिल्ली, अनुराग प्रकाशन।